परमेश्वर की सहायता से बदलते जीवन (16:13–40)

बाद में पौलुस ने फिलिप्पी में अपने काम को बताते हुए इसे ''सुसमाचार प्रचार का आरम्भ'' कहा (फिलिप्पियों 4:15); जब उसने एजियन सागर पार किया, तो अपने काम को नये सिरे से आरम्भ करना कहा। प्रेरितों के काम की पुस्तक में पौलुस के इस नये पड़ाव का जश्न एक नहीं, बल्कि मनपरिवर्तन के दो विस्तृत वृत्तांतों से मनाया जाता है। इन दो वृत्तांतों को ''ब्रिज कन्वर्शन्ज़'' माना जा सकता है जिनसे एक नये महाद्वीप का मार्ग खुला। पिछले भाग के अन्तिम पाठ में हमने इन कन्वर्शन्ज़ में पहले अर्थात लुदिया के मनपरिवर्तन का अध्ययन किया था। अब हम दूसरे कन्वर्शन में, रोमी दरोगे के मनपरिवर्तन का अध्ययन करेंगे। हम यह भी ध्यान देंगे कि इन दो वृत्तांतों के बीच एक और व्यक्ति की कहानी है जिसका जीवन सदा के लिए बदल गया था।

इस पाठ की प्रशंसा करने के महत्व में सहायता के लिए, अपने मन में सुसमाचार के लिए ऐसी तस्वीर बनाएं जिसे आप ''सम्पूर्ण भविष्य'' मानते हों। यदि आप किसी ऐसे व्यक्ति की खोज में हैं जिसे सिखाया जा सके, तो उस व्यक्ति में क्या विशेषताएं होनी चाहिए? हो सकता है कि आपके मन में कोई ऐसा व्यक्ति आए जिसे आप मसीह में लाने के लिए आशान्वित हों। वह ''सम्पूर्ण दृश्य'' आप से कितना मिलता है? सम्भवत: आपका ''आदर्श प्रोस्पेक्ट'' बहुत कुछ आपके जैसा ही है। जब हम किसी ऐसे व्यक्ति का विचार करते हैं जिसे सुसमाचार सुनाया जा सके, तो हमारे मन में कोई ऐसा ही व्यक्ति होता है जो हमारी अपनी जाति में से हो, हमारे जितना पढ़ा–लिखा, और हमारे बराबर का हो, और यदि हम कुंवारे हैं तो वह भी कुंवारा ही हो, और यदि हम शादीशुदा हैं तो वह भी शादीशुदा हो। हमें ऐसे लोगों से मेल रखना अच्छा लगता है जो हमारे जैसे ही हों।

इस पाठ की चुनौती द्वारा हमें अपने सुसमाचारीय दर्शन को विस्तार देकर सभी लोगों में उस क्षमता को देखना है। प्रेरितों अध्याय 16 यह ऐलान करता है कि सुसमाचार सभी के लिए है और परमेश्वर की सहायता से, किसी का भी जीवन बदल सकता है, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कैसी भी क्यों न हो।

प्रतिरोधरहित एक व्यापारी स्त्री (16:13-15)

पिछले पाठ में, हमने देखा था कि सुसमाचार से लुदिया नामक एक सफल व्यापारी स्त्री का जीवन बदल गया था। मैं उसे "प्रतिरोधरहित एक व्यापारी स्त्री" इसलिए कहता हूं क्योंकि, वह पौलुस, सीलास, तीमुथियुस और लूका को अपने घर ठहरने की पेशकश करने के पश्चात उनसे न में उत्तर नहीं सुनना चाहती थी। वह आत्मनिर्भर और दृढ़-निश्चय वाली औरत थी। जो सामान (बैंजनी वस्त्र) और दूसरी वस्तुएं वह बेचती थी उससे उसकी आर्थिक स्थिति (एक बड़ा मकान और बहुत से नौकर) का पता चलता है कि वह फिलिप्पी के उच्च वर्गीय समाज की प्रतिनिधि थी। परन्तु, थोड़ी देर पहले ही, पौलुस भी तो फिलिप्पी में शिखर से नीचे तक गया था।

दुष्टात्मा से ग्रस्त चिढ़ाने वाली दासी (16:16-22)

16:12 में लूका ने कहा, "... और हम उस नगर में कुछ दिन तक रहे।" उस दौरान, पौलुस और अन्यों ने बहुत से लोगों को मसीही बनाया था (आयत 40) और एक मण्डली स्थापित की (फिलिप्पियों 1:1)। परन्तु, 16:16-22 में, लूका तुरन्त फिलिप्पुस में पौलुस के आरम्भिक काम के अन्त में घटित घटना में चला गया। आयत 16 में वह कहता है, कि "जब हम प्रार्थना करने की जगह जा रहे थे, तो हमें एक दासी मिली[1] जिसमें भावी कहने वाली आत्मा थी; और भावी कहने से अपने स्वामियों के लिए बहुत कुछ कमा लाती थी।"

"प्रार्थना करने की जगह" संभवत: ... नदी के किनारे थी (16:13), जहां वे लुदिया और अन्य स्त्रियों से मिले थे। शायद वे वहां प्रार्थना करने के लिए जा रहे थे; या यह देखने के लिए जा रहे थे कि उन्हें कोई भले मन वाला व्यक्ति मिल जाए। मार्ग में, उन्हें "एक दासी" मिली थी। लुदिया की कहानी से इस दासी की ओर मुड़ना उच्च वर्गीय समाज से निम्न समाज की ओर आना है। उस समय दास को व्यक्ति नहीं माना जाता था; दास को मकान, फर्नीचर और औज़ारों की तरह निजी संपत्ति समझा जाता था।

इस दासी में "भावी कहने वाली आत्मा थी।" यूनानी शास्त्र में मूलत: "अजगर की आत्मा"[2] है। यूनानी दंतकथा में, अपोलो देवता ने अजगर का कत्ल किया था, और अजगर की आत्मा ने डैल्फी में मादा देववाणी पर काबू पा लिया था। फलस्वरूप, जब लोगों ने मान लिया कि इस स्त्री के पास वही शक्तियां हैं जो डैल्फी देववाणी के पास थीं, तो कहने लगे कि उसमें "अजगर की आत्मा"[3] है। लूका द्वारा इस वाक्यांश के इस्तेमाल का यह अर्थ नहीं कि वह अन्धविश्वास की इस कहानी में विश्वास रखता था; वह तो उदार भाषा का इस्तेमाल कर रहा था। बेचारी लड़की में अशुद्ध आत्मा थी जैसा कि हमने पहले प्रेरितों 5:16 और 8:7 में पढ़ा था;[4] वह दुष्टात्मा के वश में थी।[5] स्पष्टतया, दुष्टात्माओं को स्वाभाविक ही उन बातों का पता था जिन्हें नाशवान इन्सान नहीं जानते थे,[6] और इस अप्राकृतिक ज्ञान ने भीड़ को प्रभावित किया था। इस प्रकार भूत से ग्रस्त वह लड़की "भविष्य बताकर" अपने मालिकों के लिए "बहुत कुछ कमा लाती थी।"

बेशक मसीहियत के फैलने से बहुत से असंगत विश्वास मिट जाते हैं,[7] परन्तु हाल ही के वर्षों में हमने अन्धविश्वास को फिर से सिर उठाते देखा है। भविष्य बताने वाले, हस्तरेखा देखने वाले, बिल्लौरी शीशा देखकर भविष्य बताने वाले, जन्म कुण्डलियां बताने वाले, उपाय करने वाले, स्वयंभू मनोवैज्ञानिक, और तथाकथित आत्माओं को बुलाने वालों[8] की भरमार है और ये सब अज्ञानियों तथा ऐसे लोगों को अपना शिकार बनाते हैं जो उन पर संदेह नहीं करते। कहने की आवश्यकता नहीं कि मसीही लोग ऐसे लोगों और उनके कामों से दूर रहते हैं और दूसरों को भी दूर रहने के लिए उत्साहित करते हैं।

जब ये मिशनरी अशुद्ध आत्मा वाली उस लड़की से मिले, तो स्पष्ट है कि पहले उन्होंने उसे अनदेखा करने की कोशिश की। लड़की ने अनदेखा होने से इन्कार कर दिया, वह उनके "पीछे आकर चिल्लाने लगी कि ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो हमें उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं" (आयत 17)। उसकी बातों से हमें गिरासेनी व्यक्ति की बात याद आती है जिसमें अशुद्ध आत्मा थी और उसने चिल्लाकर यीशु को "परमप्रधान परमेश्वर का पुत्र" कहा था (मरकुस 5:7)। अशुद्ध आत्मा जिसने इस दासी को जकड़ा हुआ था, जानती थी कि प्रभु के सेवक कौन थे और फिलिप्पी में आने का उनका उद्देश्य क्या था।[9] याकूब ने कहा कि "... दुष्टात्मा भी विश्वास रखते हैं, और थरथराते हैं" (याकूब 2:19)।

हर रोज़, जहां भी पौलुस और उसके साथी जाते, यह दासी वहां पहुंच जाती और भीड़ में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाती थी: "कि ये मनुष्य परमप्रधान परमेश्वर के दास हैं।" लूका ने कहा है कि "वह बहुत दिन तक ऐसा ही करती रही" (प्रेरितों 16:17ख, 18क)। आखिर, पौलुस ने उसे भगा ही दिया। "परन्तु पौलुस दुःखी हुआ[10], और मुंह फेरकर उस आत्मा से कहा, मैं तुझे यीशु मसीह के नाम से आज्ञा देता हूं, कि उस में से निकल जा और वह उसी घड़ी निकल गई" (16:18ख)।

इस पद में दो प्रश्न उठते हैं: (1) पौलुस उस पर क्रोधित क्यों हुआ जबकि वह सच बोल रही थी? स्पष्टत: पौलुस नहीं चाहता था कि लोगों को यह लगे कि प्रभु के इन सेवकों का किसी ऐसे व्यक्ति के साथ कोई समझौता है जिसमें दुष्टात्मा हो।[11] ऐसा प्रभाव तो उसके पक्ष में और उनके विरोध में जा सकता है। (2) यदि ऐसी बात थी, तो पौलुस ने उस में से दुष्टात्मा को निकालने के लिए इतनी देर क्यों लगाई? शायद उसे उसके परिणामों का पूर्वानुमान था (आयत 19)। लड़की स्वामियों के लिए एक मूल्यवान संपत्ति थी। यदि वह दुष्टात्मा को निकाल देता, तो उसके स्वामियों की नज़रों में उसने उनकी मूल्यवान संपत्ति को नष्ट करने वाला कहलाना था।[12]

पौलुस के मन में जो भी विचार रहे हों, अन्त में उसे उस लड़की पर दया आ गई और उसने उस आत्मा को उसे यीशु के नाम में लड़की में से निकल जाने की आज्ञा दी और वह "उसी घड़ी" उस में से निकल गई। आप कल्पना कर सकते हैं कि उस लड़की ने क्या महसूस किया होगा? वर्षों से, दुष्टात्मा ने उसे बन्दी बनाया हुआ था; परन्तु अब वह स्वतन्त्र थी! वर्षों से, उसका मन बुराई का मैदान बना हुआ था; अब वह सचेत हो गई थी

(मरकुस 5:15) ! काश मैं जान पाता कि उसका क्या बना होगा। मुझे यह सोचना अच्छा लगता कि वह उन सच्चाइयों को मानकर जो वह पहले बताती थी, एक मसीही बन गई हो। परन्तु, लूका ने तुरन्त हमारा ध्यान उससे हटाकर उसके स्वामियों की ओर मोड़ दिया (आयत 19)। फिर भी, हमने वह *बदलाव* देख लिया जो उसके जीवन में आया था।

आयत 19 आरम्भ होती है, ''जब उसके स्वामियों ने देखा, कि हमारी कमाई की आशा जाती रही ... ।'' लूका ने यहां शब्दों को घुमाया, मूल शास्त्र में आयत 18 में अनुवादित शब्द ''निकल गई'' आयत 19 में भी प्रयुक्त हुआ है जहां इसका अनुवाद ''जाती रही'' है। लूका ने मूलत: यह कहा कि जब अशुद्ध आत्मा निकल गई, तो उनकी कमाई भी जाती रही। यदि आप किसी को अपना शत्रु बनाना चाहते हैं, तो उसके बटुए पर चोट करें अर्थात उसे आर्थिक हानि पहुंचाएं।

उस दासी के स्वामी ''पौलुस और सीलास[13] को पकड़ कर चौक में प्रधानों के पास खींच ले गए''[14] (आयत 19ख)। ''चौक'' नगर में पत्थर का बना चौराहा होता था, जिसके चारों ओर खम्भे, संगमरमर की इमारतें, दुकानें और मन्दिर होते थे।[15] यूनानी लोग इसे ''अगोरा''[16] और रोमी ''फोरम'' कहते थे। एक ओर संगमरमर का बना विशाल मंच था जिसका इस्तेमाल भाषण देने तथा समारोह आयोजित करने के लिए किया जाता था। यहां पर, इसने न्याय की गद्दी के रूप में काम किया।[17]

''और उन्हें फौजदारी के हाकिमों के पास ले जाकर''[18] (आयत 20क), दासी के स्वामियों ने अपने नागरिकों द्वारा पौलुस और सीलास की गिरफ्तारी के वास्तविक कारण, अर्थात अपनी आर्थिक हानि के बारे में कुछ नहीं बताया। बल्कि उन्होंने कहा कि ''ये लोग जो यहूदी हैं, हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं। और ऐसे व्यवहार बता रहे हैं, जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिए ठीक नहीं'' (आयतें 20ख, 21)। पौलुस और सीलास पर आरोप लगाने वालों ने ''तीन प्रभावशाली भावुक घोड़े [ट्रिगर] दबा दिए: (1) यहूदियों का विरोध[19] ('ये लोग यहूदी हैं'), (2) शालीनता और व्यवस्था[20] ('हमारे नगर में बड़ी हलचल मचा रहे हैं'), और (3) राष्ट्रवादिता[21] ('वे ऐसे व्यवहार बता रहे हैं जिन्हें ग्रहण करना या मानना हम रोमियों के लिए ठीक नहीं')।''

चौक में मुकदमा होने के कारण भीड़ इकट्ठी हो जाती थी।[22] आरोप सोच-समझकर सुनने वालों को क्रोध दिलाने के लिए लगाए गए थे और उनका अपेक्षित प्रभाव हुआ। ''तब भीड़ के लोग उनके [पौलुस और सीलास के] विरोध में इकट्ठे होकर चढ़ आए'' (आयत 22क)। भीड़ को शांत करने के लिए, या शायद दंगे को रोकने के लिए, ''हाकिमों ने उनके [पौलुस और सीलास के] कपड़े फाड़कर उतार डाले, और उन्हें बेंत मारने की आज्ञा दी'' (आयत 22ख)।

पिटाई वे लोग करते होंगे जिन्हें 35 और 38 आयतों में ''प्यादा'' कहा गया है। ''प्यादा'' शब्द उस यूनानी शब्द से अनुवादित हुआ है जिसका अर्थ है ''रॉड बियरर।''[23] ये लोग मजिस्ट्रेटों (फौजदारी के हाकिमों) के साथ चलते थे और अपने साथ लाल डोरियों से बन्धी लकड़ी की छड़ियों की गांठ रखते थे। ये छड़ियां अंगूठे जितनी मोटी होती थीं।

छड़ियों के मध्य में ax होता था।[24] यह गांठ रोमी अधिकार चिह्न के रूप में, और व्यावहारिक तौर पर तुरन्त न्याय करने के रोमी साधन के रूप में काम करती थी। वर्षों तक, यह चिह्न अमेरिकी सिक्के डाईम के पीछे भी अंकित किया जाता रहा।[25]

रोमियों द्वारा पिटाई करते समय, दण्ड देने के लिए कपड़े खींच लिए जाते थे। पीठ को नंगा कर दिया जाता था; आम तौर पर पीड़ित व्यक्ति को उसके कपड़े खींचकर नंगा कर दिया जाता था और सिर से पांव तक उसके शरीर पर छड़ियां लगाई जाती थीं। यहूदियों द्वारा कोड़े मारने का दण्ड उनतालीस कोड़ों तक सीमित था (2 कुरिन्थियों 11:24); रोमियों द्वारा पिटाई करने में प्रहारों की संख्या दण्ड देने वाले अधिकारी की इच्छा पर निर्भर करती थी। लूका ने इतना ही कहा कि ''बहुत बेंत लगवाकर उन्हें [पौलुस और सीलास को] बन्दीगृह में डाला'' (आयत 23)।

यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि रोमी नागरिक की पिटाई करना गैरकानूनी था। सिसेरो ने कहा है, ''एक रोमी नागरिक को बांधना दुष्कर्म है, उसे कोड़े मारना अपराध है, उसकी हत्या करना पितृ/मातृ घात के समान ही है।'' फिर, पौलुस और सीलास ने अपने रोमी नागरिक होने की बात हाकिमों को बताकर (16:37) दुर्व्यवहार से अपना बचाव क्यों नहीं किया? हो सकता है कि उन्होंने कोशिश की हो, परन्तु अधिकारियों तक उनकी आवाज़ न पहुंच पाई हो; आखिर, परिस्थितियां विपरीत थीं।[26]

इस पिटाई पर निशान लगा लें; इसका विशेष महत्व है, क्योंकि मसीही लोगों पर गैर-यहूदियों द्वारा किया गया यह पहला अत्याचार है।

श्रद्धाहीन रोमी दरोगा (16:23-40)

बन्दीगृह (आयतें 23, 24)

''बहुत बेंत लगाकर उन्हें बन्दीगृह में डाला; और दरोगा को आज्ञा दी, कि उन्हें चौकसी से रखे'' (आयत 23)। इस प्रकार अध्याय 16 में हमारा परिचय उस तीसरे व्यक्ति से करवाया जाता है जिसका जीवन प्रभु ने बदल दिया था। रोम से सेवानिवृत्त सिपाहियों को अपनी कॉलोनियां बसाने के लिए भेजा जाता था, सो कई लोग अनुमान लगाते हैं कि यह दरोगा रोमी सेना का एक अनुभवी सिपाही था। वह फिलिप्पी के समृद्ध मध्यम वर्ग का प्रतिनिधि है। मैं उसे ''श्रद्धाहीन रोमी दरोगा'' इसलिए कहता हूं, क्योंकि भुईंडोल से होश में आने से पूर्व आत्मिक बातों में उसकी दिलचस्पी का कोई प्रमाण नहीं है।

उस दरोगे को पौलुस और सीलास की ''चौकसी'' रखने के लिए कहा गया था। उस कार्य को करने के उसके अत्यधिक उत्साह से संकेत मिल सकता है कि उसका स्वभाव थोड़ा सा पर-पीड़ित व्यक्ति जैसा है। ''उसने ऐसी आज्ञा पाकर उन्हें भीतर की कोठरी में रखा'' (आयत 24क)। भीतर की कोठरी में ताज़ी हवा और रोशनी प्रवेश नहीं कर सकती थी अर्थात यह बहुत कठोर तथा ख़तरनाक अपराधियों के लिए बनाई गई थी। अंधेरी, गीली, गंदी, चूहों से भरी काल कोठरी के बारे में विचार कीजिए और आप गलत

नहीं होंगे। परन्तु, दरोगा इतनी कड़ी सुरक्षा से भी संतुष्ट नहीं हुआ था। उसने "उन के पांव काठ में ठोक दिए" (आयत 24ख)। पीड़ितों को फर्श पर बिठाकर उनकी टांगों को पूरा फैला दिया गया था, और फिर उनके पांवों को काठ में ठोक दिया गया था। पैरों को बांधना केवल उन्हें बांधने के लिए ही नहीं था; बल्कि यह यातना देने का एक ढंग भी था। दरोगे ने जो कुछ भी सेना में रहते हुए सीखा था, उसमें दया नाम की कोई बात नहीं थी।

पौलुस और सीलास अंधेरी कोठरी में बैठे थे, उनके पांव बंधे हुए थे, टांगों में अकड़न पड़ने लगी थी, पीठ पर गहरे घावों के कारण उनके लिए पीठ के सहारे बैठना मुश्किल हो गया था (आयत 33)। कष्ट और यातना पौलुस के आत्मा में उकेरे गए थे। बाद में उसने बेंतों से मारे जाने (2 कुरिन्थियों 11:25[27]) और फिलिप्पी में दुख उठाने और उपद्रव सहने की बात लिखी (1 थिस्सलुनीकियों 2:2)।

दिन बहुत ही धीरे-धीरे बीत रहा था। जब रात हुई, तो दरोगा सोने के लिए चला गया, कैदियों के साथ किए गए दुर्व्यवहार के लिए उसके मन में कोई पछतावा नहीं था जिससे उसकी नींद खराब होती।[28] कभी न खत्म होती लगने वाली पौलुस और सीलास की पीड़ा के बाद, आधी रात हो गई।

स्तुति (आयत 25)

यदि आप और मैं किसी अंधेरी कोठरी में होते और हमारी पीठों के गहरे घावों पर खून जमा होता, पांवों में बेड़ियां होतीं, तो हम आधी रात में क्या कर रहे होते? चिल्ला रहे होते? शिकायत कर रहे होते? परन्तु लूका ने लिखा, कि "आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे"[29] (आयत 25क)। ऐसा न सोचें कि पौलुस और सीलास इसलिए गा रहे थे क्योंकि उनके शरीर राहत के लिए पुकार नहीं सकते थे। वे तो अपने हालातों के बावजूद गा रहे थे।[30] सब कुछ ठीक होने पर तो कोई भी परमेश्वर की स्तुति कर सकता है; लेकिन जब सब कुछ गलत हो रहा हो तब परमेश्वर की महिमा गाने के लिए बड़े विश्वास की आवश्यकता होती है।[31] पौलुस ने बाद में इफिसुस के मसीही लोगों को "... सदा सब बातों के लिए ... प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते" हुए गाते रहने की चुनौती दी थी (इफिसियों 5:19, 20)। पौलुस ने इस गुण का प्रदर्शन फिलिप्पी की जेल में किया था।

लूका ने ध्यान दिलाया कि दूसरे कैदी "उन की सुन रहे थे" (आयत 25ख)। दूसरे कैदियों ने इससे पहले भीतर की कोठरी में से चीखें और गालियों की आवाज़ें तो सुनी होंगी, परन्तु उन्होंने कभी प्रार्थनाएं और परमेश्वर के भजन नहीं सुने थे।

शक्ति (आयतें 26-30)

आधी रात के संगीत समारोह में अचानक बाधा पड़ गई जब "एकाएक बड़ा भुईंडोल हुआ, यहां तक कि बन्दीगृह की नेव हिल गई" (आयत 26क)। फिलिप्पी का इलाका भूकंप ग्रस्त था।[32] मुझे नहीं मालूम कि रिक्टर पैमाने पर इस भूकंप को कितना मापा गया

होगा, परन्तु जिससे बन्दीगृह की नींव हिल गई थी वह सचमुच ''बड़ा'' भूकंप ही होगा। भूकंप इतना तेज़ था कि इससे बन्दीगृह के द्वार खुल गए और दीवारों में दरारें आ गईं, और वे सभी बोल्ट खुल गए जिनसे कैदी बेड़ियों में बंधे हुए थे। ''और तुरन्त सब द्वार खुल गए; और सब के बंधन खुल गए'' (आयत 28ख)। यह भूकंप प्राकृतिक भी हो सकता है और नहीं भी,[33] परन्तु बन्दीगृह में किसी को संदेह नहीं था कि यह रात में गाए जाने वाले गीतों के जवाब में स्वर्ग की ओर से था।

भूकंप के शोर के कारण दरोगा गहरी नींद से जाग उठा। वह घबराकर उठा और उसने धुंधली सी रोशनी में अधखुले फाटकों को देखा। ''और दरोगा जाग उठा, और बन्दीगृह के द्वार खुले देखकर समझा कि बन्धुए भाग गए, सो उस ने तलवार खींचकर अपने आप को मार डालना चाहा'' (आयत 27)। यदि किसी को बन्दीगृह का कार्यभार सौंपा गया हो और वह कैदी को बच निकलने की अनुमति दे देता, तो रोमी कानून के अनुसार उसे वही दण्ड दिया जाता जो उस कैदी के लिए होता था।[34] स्पष्टतया, उस जेल के एक या दो कैदियों को तो मृत्यु दण्ड मिला ही हुआ था। यदि वे भाग गए होते, जैसा कि दरोगे ने सोचा था, तो उनके स्थान पर उसे मृत्यु दण्ड मिलना था। यह विचार करके कि ''इससे निकलने का सम्मानजनक ढंग'' क्या था, यह दरोगा आत्महत्या करने लगा।

समझ लें कि यह मूर्तिपूजकों का एक दर्शन था, बाइबल की शिक्षा का नहीं। परमेश्वर के लोगों के लिए आत्महत्या करना कभी भी ''सम्मानजनक बात'' नहीं है। मनोवैज्ञानिक बताते हैं कि लोग आत्महत्या इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि मृत्यु के द्वार को छोड़ उनके लिए हर द्वार बन्द हो चुका है। लेकिन, परमेश्वर के लोग जानते हैं, कि उनके हालात चाहे कितने भी बुरे क्यों न हो जाएं, परमेश्वर उनके लिए ''निकास'' का मार्ग उपलब्ध करवा ही देगा ताकि वे पीड़ा को ''सह'' सकें (1 कुरिन्थियों 10:13)।

जैसे ही दरोगा ने तलवार अपनी छाती में मारने के लिए उठाई, ''पौलुस ने ऊंचे शब्द से पुकारकर कहा; अपने आप को कुछ हानि न पहुंचा, क्योंकि हम सब यहां हैं!'' (आयत 28)।[35] दरोगे को पौलुस की बात पर विश्वास नहीं हुआ। ''वह दीया मंगवाकर[36] भीतर लपक गया'' (आयत 29क) ताकि कैदियों को स्वयं देख सके। उसे आश्चर्य हुआ, कि पौलुस की बातें सही थीं।[37] वैस्टर्न टैक्सट में कहा गया है कि दरोगे ने जल्दी से ''दूसरे कैदियों को बन्द किया।'' ''और कांपता हुआ पौलुस और सीलास'' की ओर आया और उनके सामने गिर गया (आयत 29ख)। उसकी आत्मा बन्दीगृह से भी अधिक ज़ोर से हिल गई थी। जब पौलुस और सीलास को उसकी निगरानी में रखा गया था, तो उसके लिए वे थोड़ा सा कष्ट, अर्थात मामूली से अपराधी थे जिन्हें सबक सिखाना था। अब, एक के बाद एक घटनाओं की नाटकीय शृंखला ने उसे दिखा दिया था कि ये व्यक्ति उस शक्ति के नियन्त्रण में हैं जो उन सब शक्तियों से बड़ी है जिन्हें वह जानता था।[38]

स्पष्टतया वह उन्हें बन्दीगृह से ''बाहर'' (आयत 30क), लेकर अपने कमरे में आया होगा (आयत 32), और पूछने लगा कि, ''हे साहिबो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?'' (आयत 30ख)। उसके शब्दों से बहुत से प्रश्न उठते हैं: उदाहरण के लिए, दरोगा के लिए

''उद्धार पाने'' का ठीक-ठीक अर्थ क्या था? क्या वह शास्त्र में से ''उद्धार पाने'' के विषय में उतना ही जानता था जितना हम जानते हैं; या यह केवल, प्रभु के इन सेवकों की आज्ञा से उस शक्ति से भयभीत हुए एक मूर्तिपूजक की निराशाजनक पुकार थी, जो उस दुर्व्यवहार के परिणाम से बचना चाहता था, जो उसने उनके साथ किया था।

इसके अलावा, यदि उद्धार पाने की सही धारणा का दरोगा को पता था, तो उसे क्यों लगा कि पौलुस और सीलास के पास उसका उत्तर हो सकता है? क्या इससे पहले उनके प्रचार की ख़बर उसने सुनी थी? क्या पौलुस और सीलास को बन्दीगृह में लाने वालों ने उसे बताया था कि उस दासी ने कहा था कि वे, ''परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं, जो ... उद्धार के मार्ग की कथा सुनाते हैं'' (आयत 17)? क्या जब वह उनके पांवों को काठ में ठोक रहा था तो पौलुस और सीलास ने उससे कुछ कहा था? क्या उसे अपने आप ही पता चल गया था कि वे लोग उसकी सहायता कर सकते हैं? हम कोई निश्चित उत्तर नहीं दे सकते, परन्तु इतना स्पष्ट है कि यह श्रद्धाहीन मूर्तिपूजक पूरी तरह से हिल गया था। घने अंधेरे में वह स्वयं को मौत के कगार पर खड़ा देख रहा था, और जो कुछ उसने देखा उससे वह कांप उठा! और चिल्ला उठा, ''हे साहिबो, उद्धार पाने के लिए मैं क्या करूं?''

प्रचार (आयत 31)

उसके शब्दों का जो भी अर्थ रहा हो, उससे पौलुस और सीलास के लिए अपनी बात आरम्भ करने में आसानी हो गई थी। ''उन्होंने कहा, प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास कर, तो तू और तेरा घराना उद्धार पाएगा'' (आयत 31)। सभा के सामने खड़े होकर, पतरस ने ज़ोर दिया था कि उद्धार केवल यीशु मसीह में ही मिलता है, ''क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें'' (4:12)। यदि दरोगा उद्धार पाना चाहता था, तो यह यीशु के द्वारा ही हो सकता था।

कई बार लोग हैरान होते हैं कि दरोगे को वही उत्तर क्यों नहीं दिया गया जो पिन्तेकुस्त के दिन उन यहूदी लोगों को मिला था जिन्होंने पूछा कि वे क्या करें (2:37): अर्थात यह कि ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (2:38)। कोई यह भी पूछ सकता है कि उसे वही उत्तर क्यों नहीं दिया गया जो शाऊल के प्रश्न कि ''हे प्रभु मैं क्या करूं?'' के उत्तर में दिया गया था (22:10): अर्थात यह कि ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (22:16)। पिन्तेकुस्त के दिन यहूदियों और पौलुस को दिए उत्तर अर्थात ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए *यीशु मसीह के नाम से* बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38); ''उठ, बपतिस्मा ले, और *उसका नाम लेकर* अपने पापों को धो डाल'' (22:16) फिर से देखें। यीशु के नाम से कुछ करने, या यीशु का नाम लेने से पहले मान लिया जाता है कि कोई यह जानता है कि यीशु कौन है और वह यीशु में विश्वास करता है। दरोगा को इसका ज्ञान नहीं था; न ही उसे यह विश्वास था। यदि उसे अन्धे व्यक्ति की

तरह "मसीह के नाम से" कुछ करने के लिए कहा गया होता, तो वह यही पूछता कि "वह कौन है कि मैं उस पर विश्वास करूं?" (यूहन्ना 9:36)।

क्षमा (आयतें 32-34)

पौलुस और सीलास ने जल्दी ही दरोगे के कम ज्ञान में वृद्धि कर दी। "और उन्होंने उसको, और उसके सारे घर के लोगों को प्रभु का वचन सुनाया" (आयत 32)। "सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों 10:17)। "प्रभु के वचन" में सम्भवत: सच्चे परमेश्वर का "वचन" शामिल था (आयत 34)। इसमें निश्चय ही यीशु और क्रूस का "वचन" शामिल था। अगली आयत से स्पष्ट है कि इसमें यीशु के बलिदान से लाभ लेने के "वचन" के साथ उस जीवन का "वचन" भी था जो उसके बाद आने वाला था। "और रात को उसी घड़ी उसने [दरोगा ने] उन्हें ले जाकर उनके घाव धोए, और उसने अपने सब लोगों समेत तुरन्त बपतिस्मा लिया"[39] (आयत 33)। यह तथ्य कि दरोगे ने उसी समय वचन को ग्रहण किया,[40] उसकी ईमानदारी का प्रमाण है। यह तथ्य कि उसने उनके घाव धोए, उसके प्रायश्चित का प्रमाण है; यह तथ्य कि उसने बपतिस्मा लिया, उसके समर्पण का प्रमाण है।

हम यह नहीं जानते कि दरोगा और उसके परिवार ने किस जगह पर डुबकी ली होगी। हो सकता है कि निकट के किसी तालाब में, या हो सकता है कि वे नगर के बाहर गैंगाइट्स नदी में चले गए हों।[41] बपतिस्मा लेने के बाद, दरोगा ने "उन्हें [पौलुस और सीलास को] अपने घर ले जाकर, उनके आगे भोजन रखा[42] और सारे घराने समेत परमेश्वर पर विश्वास करके आनन्द किया" (आयत 34)। वह एक रात में दो बार बचाया गया था, पहली बार शारीरिक मृत्यु से और दूसरी बार आत्मिक मृत्यु से! उसकी आत्मा बन्दीगृह में पौलुस और सीलास के शरीरों के बन्दी होने से अधिक ज़ोरदार ढंग से पाप के बन्धन में कैद थी, परन्तु अब वह स्वतन्त्र था!

ध्यान दें कि आयत 34 में "विश्वास" शब्द का इस्तेमाल दरोगा द्वारा वचन मानने को ध्यान में रखकर व्यापक अर्थ में किया गया है।[43] उसे यह बताया गया था कि यदि वह विश्वास करे, तो वह और उसका घराना उद्धार पाएगा (आयत 31)। उसे प्रभु का वचन सिखाया गया था। मन फिराने और बपतिस्मा लेने के बाद, फिर यह ज़ोर दिया गया कि उसने विश्वास किया *था*।

साम्प्रदायिक कलीसियाओं के प्रचारकों के लिए आयत 30 में दरोगा के प्रश्न, और फिर आयत 31 में उसके उत्तर को उद्धृत करके ऐसे रुक जाना जैसे यह कहानी का अन्त हो, कोई असामान्य बात नहीं है।[44] जैसे जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने कहा है, कि वे "जल्दी से बन्दीगृह से निकल जाते हैं।" दरोगा के मनपरिवर्तन की कहानी की अच्छी तरह से पड़ताल करने पर पता चलेगा कि उसका उद्धार भी उसी प्रकार हुआ था जैसे उन सबका जिनके उदाहरण हमने पढ़े हैं: अर्थात, उसे सुसमाचार सुनाया गया; उसने यीशु में विश्वास किया; उसने अपने पापों से मन फिराया; और बपतिस्मा लिया।

विरोध (आयतें 35-40)

कहानी की समाप्ति परिहास का पुट लिए हुए है। ''जब दिन हुआ तब हाकिमों ने प्यादों के हाथ [दरोगा को] कहलवा भेजा कि उन मनुष्यों को छोड़ दो''[45] (आयत 35)। अधिकारियों ने सोचा होगा कि जेल में रखकर रात भर की पिटाई उन गड़बड़ी करने वाले यहूदियों को सबक सिखाने के लिए काफ़ी थी। स्पष्टतया, दरोगा ने हाकिमों की ओर से आए अधिकारियों के साथ, ''ये बातें पौलुस से कह सुनाईं, कि हाकिमों ने तुम्हारे छोड़ देने की आज्ञा भेज दी है, सो अब निकलकर कुशल से चले जाओ'' (आयत 36)। उसने पौलुस और सीलास को ''निकलकर'' जाने के लिए कहा, इसलिए स्पष्ट है कि वे अपने नये भाई को उलझन में पड़ने से बचाने के लिए रात के अन्त में बन्दीगृह की कोठरी में लौट आए थे। दरोगा तो बहुत प्रसन्न था कि उसकी कठिन-परीक्षा समाप्त हो गई है।

लेकिन पौलुस कोठरी से नहीं हिला। उसने अधिकारियों का सामना किया (याद रखें कि मूल भाषा से संकेत मिलता है कि ये वही बेंत मारने वाले थे जिन्होंने उनकी पिटाई की थी) और ''उन से कहा, उन्होंने हमें जो रोमी मनुष्य हैं,[46] दोषी ठहराए बिना, लोगों के साम्हने मारा, और बन्दीगृह में डाला, और अब क्या हमें चुपके से निकाल देते हैं? ऐसा नहीं, परन्तु वे आप आकर हमें बाहर ले जाएं'' (आयत 37)। हमने पहले ध्यान दिया था कि किसी रोमी नागरिक को मारना एक बड़ा अपराध था। यदि उनके इस व्यवहार की ख़बर रोम में पहुंच जाती, तो कम से कम सज़ा में उन हाकिमों की नौकरी तो चली ही जाती, और अधिक से अधिक उनके सिर कट सकते थे।

प्यादों ने जल्दी से लौट कर ''ये बातें हाकिमों से कह दीं, और वे यह सुनकर कि वे रोमी हैं, डर गए और [उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर बन्दीगृह में] आकर उन्हें मनाया, और [बन्दीगृह से] बाहर ले जाकर बिनती की कि नगर से चले जाएं'' (आयतें 38, 39)। इन महत्वपूर्ण अधिकारियों के घुटनों पर झुकने की तस्वीर बनाने की कोशिश करें, जिसमें वे पौलुस और सीलास से बिनती करते हैं कि वे बिना शोर किए नगर को छोड़ जाएं। यह बिनती करते समय उनके माथे से पसीना टपक रहा है।

इस दृश्य को छोड़ने से पहले, हमें ज़ोर देना चाहिए कि पौलुस ने नगर के हाकिमों को तंग करने के लिए रोमी नागरिक होने के अपने अधिकारों पर ज़ोर नहीं दिया (रोमियों 12:17, 19)। बल्कि, उसने जवान मसीहियों के उदाहरण के लिए एक कीर्तिमान बनाने की इच्छा की। उन्हें यह बताए बिना कि उनके संस्थापक को गिरफ्तार क्यों किया गया, उसे क्यों मारा गया और जेल में क्यों डाला गया और भी कई मुश्किलें (फिलिप्पियों 1:28-30) आई होंगी और फिर संदेह के कारण उन्हें अचानक नगर छोड़ना पड़ा था।[47]

वर्षों से, यह कहानी पढ़ते हुए मैं व्याकुल हो जाता हूं। इन अधिकारियों ने रोमी नागरिकता के विषय में पौलुस की बात क्यों मान ली? स्पष्ट है कि, उन्होंने पौलुस से कोई प्रमाण नहीं मांगा।[48] यदि प्रमाण की आवश्यकता नहीं थी, तो हर कोई दण्ड से बचने के लिए रोमी नागरिक होने का दावा क्यों नहीं करता था? और खोज करने पर मुझे अंतरिम उत्तर मिले: रोमी नागरिक होने का झूठा दावा करना किसी रोमी नागरिक के साथ दुर्व्यवहार

करने से भी गंभीर अपराध था। एच. लियो बोल्स के अनुसार, ''रोमी नागरिकता होने के झूठे दावे की सज़ा मौत थी; इतनी भयंकर सज़ा होने के कारण कोई झूठा दावा नहीं करता था।''

पौलुस और सीलास नये क्षेत्र में जाने के लिए लगभग तैयार होंगे, सो उन्होंने हाकिमों की बिनती मान ली (मुझे यकीन है कि इससे अधिकारियों को बहुत राहत मिली होगी)। लेकिन, ऐसा उन्होंने बिना हड़बड़ी और शान से किया। ''वे बन्दीगृह से निकलकर लुदिया के यहां गए'' (प्रेरितों 16:40क),[49] जहां से उनका कार्य चलता था और शायद यही वह जगह थी जहां वे इकट्ठे होते थे। इस समय, काफ़ी भाई वहां इकट्ठे हुए थे; शायद वहां प्रार्थना सभा चल रही थी (देखिए 12:12)। ''और [पौलुस और सीलास ने] भाइयों से भेंट करके उन्हें शान्ति दी'' (16:40ख)। ये वही दो सुसमाचार प्रचारक थे जिनके साथ दुर्व्यवहार हुआ था; फिर भी उनकी चिन्ता अपने लिए नहीं, बल्कि मसीह में इन कोमल बालकों के लिए थी। अन्त में, उन से विदाई लेकर वे ''चले गए'' (आयत 16:40ग)। इस प्रकार एक ऐसी मण्डली की स्थापना हो गई, जो हर वर्ष के बीतने से पौलुस को और प्रिय होती जाती थी (फिलिप्पियों 1:3-8; 4:1)।

सारांश

अपने पाठ के हवाले पर विचार करने से, बदलते हुए जीवनों के सम्बन्ध में बहुत से सबक मन में आते हैं: (1) परमेश्वर की सहायता के बिना जीवन नहीं बदल सकते। (2) लेकिन, हम परमेश्वर के साथ *सहयोग* कर सकते हैं, विशेषकर सुसमाचार के प्रचार के द्वारा। (3) यह समझते हुए कि परमेश्वर हमारा सहकर्मी है, हम हमेशा दृढ़ विश्वास से आगे बढ़ सकते हैं। फिर भी, एक बड़ी शिक्षा है जिस पर मैं ज़ोर देना चाहता हूं कि *कोई भी स्थिति निरुपाय नहीं है*। यदि मैं और आप फिलिप्पी में ऐसे लोगों को ला रहे होते जो बदल सकते थे, तो हमारी सूची में वह अध-पागल दासी और किसी क्रूर रोमी दरोगे का नाम नहीं होता।

> द *डिस्कवरज़* में डैनियल बूर्सटिन बोजादर द्वीप की कहानी बताता है। यह भूमि का एक टुकड़ा था जो अफ्रीकी समुद्र के तट के अटलांटिक तक फैला हुआ था, परन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी में कोई भी जहाज़ उधर से जाने का साहस नहीं करता था। बोजादोर द्वीप दूसरे द्वीपों से अधिक खतरनाक नहीं था, परन्तु इसके बारे में, बुरी-बुरी अफवाहें फैली हुई थीं, शायद संसार के अन्त तक। बूर्सटिन कहता है कि इसीलिए उस जमाने के नागरिकों के ''मन में एक बाधा'' थी।

जब मैं और आप उन लोगों को देखते हैं जिनके जीवन हम बदलना चाहते हैं, तो अपने ''मन में कोई बाधा'' नहीं आने देनी चाहिए। आइए सब के साथ सुसमाचार को बांटें।[50]

प्रवचन नोट्स

लड़की के स्वामियों के लोभ तथा लालच को केन्द्र बनाकर ब्रूस वाइट ने भूतग्रस्त दासी की कहानी पर एक अलग प्रवचन (अप्रकाशित) दिया। उसने ध्यान दिलाया कि (1) लोभ ईमानदारी को कम कर देता है (जिस प्रकार लड़की से व्यवहार किया गया था), (2) लोभ सच्चाई को सामने नहीं आने देता (पौलुस और सीलास के बारे में लड़की के स्वामियों ने झूठ बोला), (3) लोभ के कारण अन्याय होता है (जैसे पौलुस व सीलास के साथ हुआ)। लोभ पर अधिक प्रचार नहीं होता, सो आपको इस पर विचार करना चाहिए।

आधी रात को पौलुस और सीलास के गाने और प्रार्थना करने से ''रात में गीतों'' पर बहुत से प्रवचन देने की प्रेरणा मिली है। रिक एचले ने सुझाव दिया कि संकट की ''रात में गीत'' हम भी गा सकते हैं यदि हम (1) संकटों को मन में रखें, (2) स्वर्ग में अपना धन रखें, और (3) परमेश्वर में भरोसा रखें।

''युगों के सबसे बड़े प्रश्न'' (प्रेरितों 16:30) पर बहुत से प्रवचन भी दिए जा चुके हैं। दरोगा का प्रश्न भागों में बट जाता है और प्रत्येक भाग में एक मुख्य विचार मिलता है: (1) ''उद्धार पाने के लिए''-हर युग का प्रश्न, (2) ''मैं''-एक व्यक्तिगत प्रश्न, (3) ''क्या''-एक खोजपूर्ण प्रश्न, (4) ''करूं''-कुछ करने के लिए आवश्यक प्रश्न। [अंग्रेज़ी की बाइबल में ''वॅट मस्ट आई डू'' को पांच भागों में बांटने पर पांच प्रश्न बनते हैं (5) ''चाहिए''-आवश्यक प्रश्न।]

यदि आप प्रेरितों के काम में मन परिवर्तनों पर श्रृंखला में प्रवचन देने का निर्णय लेते हैं, तो इस पाठ में दरोगे के मनपरिवर्तन पर आवश्यक सामग्री है। उस दासी की घटना की कहानी की पृष्ठभूमि के रूप में समीक्षा करके जल्दी से दरोगे का परिचय दे देना चाहिए। अध्याय के अन्त में नगर के अधिकारियों से पौलुस के विरोध को नज़रअन्दाज किया जा सकता है या उसका थोड़ा सा उल्लेख किया जा सकता है। मैंने ''श्रद्धाहीन रोमी दरोगा'' शीर्षक के कुछ उप-भाग बनाए थे जो आपके पाठ में मुख्य प्वाइंट बन सकते हैं। इस सामग्री को बांटने का एक और ढंग तीन Cओं के साथ हो सकता है: (1) Convicts (पाप मानने वाले), (2) A Concert (एक मन्त्रणा), (3) A Conversion (एक मनपरिवर्तन)। दरोगे के मन परिवर्तन पर प्रचार के लिए मैंने ''दरोगे ने बपतिस्मा क्यों लिया था?'' शीर्षक का प्रयोग किया है। मैं पूरी कहानी में जाता हूं, और फिर प्रश्न पूछता हूं ''यदि प्रेरितों 16:30, 31 से यह शिक्षा मिलती है कि हमारा उद्धार केवल विश्वास से ही होता है, तो दरोगे ने बपतिस्मा क्यों लिया था?'' और अधिक स्पष्ट करने के लिए, मैं पूछता हूं ''यदि बपतिस्मा किसी विशेष समारोह में ही होना चाहिए तो उसने 'रात को उसी घड़ी' बपतिस्मा क्यों लिया था?''

विजुअल-एड नोट्स

दरोगे के मन परिवर्तन के साथ रोड मैप अर्थात नक्शे का इस्तेमाल विजुअल एड के लिए आम तौर पर किया जाता है: नक्शे के बाईं ओर आरम्भ के एक प्रसिद्ध बिन्दु (बिन्दु A) से लें और फिर नक्शे के दाईं ओर के प्रसिद्ध गंतव्य स्थान (बिन्दु B) को लें। इन दो बिन्दुओं में सड़क को एक मोटी रेखा से दर्शाएं। अन्त में, रास्ते में दो ठहराव बनाकर उन्हें स्पष्ट रूप से चिह्नित कर लें। क्लास में, नक्शे को दिखाकर मान लें कि किसी ने बिन्दु B तक जाने के लिए बिन्दु A से यात्रा आरम्भ की। यात्रा आरम्भ करने से पहले, वह व्यक्ति किसी से पूछता है ''मेरी मंज़िल कितनी दूर है?'' यही प्रश्न वह अपने पहले तथा दूसरे ठहराव में पूछता है। हर बार प्रश्न तो वही पूछा जाता है, लेकिन उसका उत्तर अलग-अलग मिलता है, क्योंकि हर बार वह मंजिल के निकट पहुंच रहा होता है। उसी प्रकार, प्रेरितों के काम की पुस्तक में वही बुनियादी प्रश्न ''मैं क्या करूं'' तीन बार पूछा गया था (2:37; 22:10; 16:30), लेकिन हर बार उसका उत्तर थोड़ा सा भिन्न मिला (2:38; 22:16; 16:31)। इसमें कोई अन्तर्विरोध नहीं है; अलग-अलग उत्तर ''उद्धार के मार्ग पर'' अलग-अलग स्थानों पर पहुंचे प्रश्न पूछने वालों के कारण दिए गए थे।

पाद टिप्पणियां

[1]लूका ने यह संकेत देने के लिए कि इस घटना के घटने के समय वह वहीं था, उत्तम पुरुष का इस्तेमाल जारी रखा। [2]अजगर एक बहुत बड़ा सांप होता है जो अपने शिकार के इर्द-गिर्द कुंडली मारकर उसे जकड़ लेता है। [3]प्राचीन समय के कम से कम एक लेखक के अनुसार, ''अजगर'' शब्द का इस्तेमाल ''किसी पेटबोला'' के लिए भी किया जाता था, और इस तथ्य को बहुत से आधुनिक लेखकों ने प्राय: उठाया है। परन्तु यह संभव है कि उन दिनों उन्हें ''पेटबोला'' शब्द के अर्थ का पता नहीं था। आज हम इस शब्द का इस्तेमाल उसके लिए करते हैं जो ''अपनी आवाज़ फेंक'' सकता है, और किसी पाखंडी के लिए ऐसा करना लाभदायक हुनर होता होगा अर्थात वह यह दिखाता होगा कि मूर्तियां बोलती हैं, देवता ऊपर से बोलते हैं, आदि। लेकिन, ''पेटबोला'' शब्द का अक्षरश: अर्थ है ''पेट से बोलना''; बाइबल के समय, सम्भवत: यह उस अन्धविश्वास को कहा जाता था जिसमें आत्माएं लोगों के शरीरों को वश में कर लेती थीं और उनके अन्दर से (अर्थात, उनके पेट से) बोलती थीं। [4]उन आयतों पर नोट्स देखें। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 201 पर ''दुष्ट-आत्माओं'' पर अतिरिक्त लेख देखें। [6]यह हमारी इस कहानी से स्पष्ट है। अशुद्ध आत्मा के प्रभाव में वह जानती थी कि पौलुस और अन्य साथी परम प्रधान परमेश्वर के दास हैं। ध्यान दें कि दुष्टात्मा सर्वज्ञ (जिसे सब ज्ञान हो) *नहीं* थे। परन्तु, भाग्यफल बताने वालों में विश्वास रखने वाले लोगों को प्रभावित करने के लिए इतना ही काफ़ी है। [7]नये नियम में प्रकट मसीहियत को देखें। तथाकथित ''मसीहियत'' के कुछ रूपों ने अन्धविश्वास को हतोत्साहित करने के बजाय उसे बढ़ावा ही दिया है। [8]''आत्माओं को बुलाने वालों'' का दावा है कि शक्तिशाली देवताओं की शक्तियां और आवाज़ें उनसे होकर ही जाती हैं। [9]''परम प्रधान परमेश्वर'' शब्द का इस्तेमाल यूनानियों द्वारा ज्यूस के लिए भी किया जाता था। यूनानी शब्द के अनुवाद ''उद्धार'' के भी कई अर्थ थे। इसलिए, संभव है, कि लड़की की आवाज़ सुनने वालों ने उसके शब्दों के पूरे महत्व को गलत समझा; पर क्योंकि नया नियम संकेत देता है कि दुष्ट आत्माएं सच्चे परमेश्वर और उसके दासों को अच्छी तरह पहचानती थीं, इसलिए यह लगता नहीं

कि उस लड़की के मन में पौलुस और दूसरों के प्रति मूर्तिपूजक होने की धारणा थी। [10]''दुखी हुआ'' उस लड़की के प्रति पौलुस की सहानुभूति हो सकती है। NASB अनुवादकों का मत था कि यह भी हो सकता है कि पौलुस उसके बार-बार बोलने से ''चिढ़'' गया।

[11]यीशु ने दुष्टात्माओं को अपनी गवाही देने की अनुमति नहीं दी थी (मरकुस 1:24, 25, 34)। [12]इस घटना को उस क्षेत्र के अनुसार देखें जिसमें आप रहते हैं: कल्पना करें कि कोई आपके श्रोताओं की सम्पत्ति की सबसे कीमती वस्तु को क्षति पहुंचा रहा है। [13]हमें नहीं मालूम कि उन्होंने पौलुस और सीलास को ही क्यों पकड़ा, लूका और तीमुथियुस को क्यों नहीं। यह सुझाव दिया गया है कि पौलुस और सीलास यहूदियों के जैसे दिखाई देते थे (लूका एक गैर-यहूदी था, और तीमुथियुस की मां तो यहूदिन थी लेकिन पिता गैरयहूदी था) (आयत 20)। व्याख्या करना आसान है: वे पौलुस के पीछे पड़े हुए थे, और जब वे उसे खींचकर लाए तो सीलास उसके साथ था। [14] आयत 19 में अनुवादित ''प्रधानों'' शब्द आयत 20 में अनुवादित ''फौजदारी के हाकिमों'' शब्द से भिन्न है, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि उन्हें पहले छोटे और फिर बड़े अधिकारियों के सामने लाया गया। लेकिन, हो सकता है कि ये शब्द, उन्हीं लोगों के लिए दो प्रकार से कहे गए हों। [15]वर्षों तक, बाइबल में ''चौक'' शब्द पढ़कर मुझे लगता था कि यह फेरीवालों और दुकानदारों के शोरगुल भरा बाजार होता होगा। बाइबल में वर्णित ''चौक'' किसी समृद्ध नगर के चौक को कहा गया है। फिलिप्पी में फोरम की खुदाई हुई है। यह अमेरिका के फुटबॉल मैदान से लगभग आधा है। [16]आयत 19 में अनुवादित शब्द ''चौक'' का मूल यूनानी शब्द *अगोरां* है। [17]इस मंच के लिए यूनानी शब्द *बिमा* था (18:12 पर नोट्स देखिए)। फिलिप्पी में *बिमा* की खुदाई हुई है और यह *अगोरा* के उत्तर की ओर है। [18]एक बार फिर लूका ने स्थानीय अधिकारियों के लिए बिल्कुल सही राजनीतिक शब्द का प्रयोग किया। [19]स्पष्टतया यहूदी लोग फिलिप्पी में प्रसिद्ध नहीं थे। अध्याय 18 में हम ध्यान देंगे कि यहूदियों को रोम से निकाल दिया गया था (आयत 2)। शायद यह बात पहले ही हो चुकी थी, और रोमी बस्तियों में यहूदियों के विरुद्ध पहले से अधिक तीव्र भावनाएं थीं। [20]नगर व्यवस्था को बनाए रखना रोमी व्यवस्था का प्रमुख उद्देश्य था।

[21]याद रखें: रोमी बस्तियों में रहने वाले लोग रोम में रहने वालों से अधिक रोमी थे। [22]''भले मनों की तलाश'' पाठ में 17:5 पर नोट्स देखिए। [23]रोमी लोग इन्हें ''लिक्टर'' कहते थे। [24]मैंने यह चिह्न, छड़ियों के एक गट्ठे पर जिसके मध्य एक ax होता है, यूरोप के कई भागों में देखा है।[25]इटली में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मुसोलिनी ने प्राचीन काल के रोमी साम्राज्य के रहस्यों से लाभ उठाने की कोशिश में इस चिह्न का भी उपयोग किया। [26]कई लोगों ने सुझाव दिया है कि पौलुस ने अपनी रोमी नागरिकता की बात करने के लिए आयत 37 तक प्रतीक्षा की, सो इस तथ्य में राजनीतिक प्रभाव अधिक होगा। यह अधिक तर्कसंगत लगता है कि जब उसे और सीलास को पीटा गया था तो पौलुस ने रोमी नागरिक के रूप में पहचान बनाने का प्रयत्न किया होगा, परन्तु किसी कारण या तो उसकी आवाज़ किसी ने सुनी नहीं या उस पर विश्वास नहीं किया। [27]फिलिप्पी में उसे केवल यही मार सहनी पड़नी थी। [28]तथ्य कि दरोगा ने आत्महत्या करने के लिए तलवार निकाली (आयत 27) संकेत देता है कि वह जेल में ड्यूटी पर (वर्दी पहनकर) सोया हुआ था। परन्तु, सम्भव है कि वह वहां थोड़ी दूर कर्मचारियों के लिए बनाए गए घरों में से किसी एक में, या जेल के मैदान में सो रहा था, और अपनी पेटी निकालकर वह बाहर की ओर भागा। [29]इस स्थिति में मेरे मन में यदि कोई गाना आ भी रहा होता, तो वह ''उदासी भरा'' ही होता, लेकिन वे भजन गा रहे थे। [30]क्या लूका द्वारा उनके ''आधी रात'' गाने के उल्लेख के तथ्य का यह अर्थ है कि प्रार्थना करने और गाने से पहले पौलुस और सीलास को अपना व्यवहार दिखाना आवश्यक था? मुझे नहीं मालूम।

[31]परमेश्वर में विश्वास ही प्रमुख बात है। परमेश्वर बदलता नहीं है। यदि हमारे जीवन में सब कुछ ठीक-ठाक होने पर वह महिमा लेने के योग्य है, तो सब कुछ गलत लगने के समय भी वह हमसे महिमा लेने के योग्य है। [32]तुर्की व यूनान में मैं जहां भी गया, मुझे कालान्तर में वहां आए व्यापक भूकंपों के प्रमाण देखने को मिले। [33]किसी न किसी रूप में, इसमें स्वर्गदूतों की भूमिका होती होगी-जैसे जेल से छुड़ाने की पिछली दो ईश्वरीय घटनाओं में हुआ था (प्रेरितों 5:19; 12:7, 10, 11)। [34]देखिए प्रेरितों 12:19. [35]यह कैसे

हो गया कि पौलुस ने दरोगा को देखा पर दरोगा ने उसे नहीं देखा? पौलुस को कैसे पता चला कि कोई भी निकलकर भागा नहीं? इन विवरणों का लूका की कहानी से कोई सम्बन्ध नहीं था, इसलिए उसने हमें नहीं बताया। शायद पौलुस की आंखें अन्धेरे में दरोगा की आखों से साफ़ देख सकती थीं। हो सकता है परमेश्वर ने पौलुस को उस परिस्थिति में अलौकिक ज्ञान दे दिया हो। [36]इससे संकेत मिलता है कि अन्य पहरेदार ड्यूटी पर थे, या कम से कम उसके निकट थे। [37]दूसरे कैदी क्यों नहीं भागे जब कि उन्हें अवसर मिला था? शायद वे कुछ देर के लिए स्तब्ध रह गए थे कि यह क्या हुआ। शायद पौलुस ने उन्हें रुकने के लिए कहा और वे उसकी बिनती के विरुद्ध कुछ भी करने से डरते थे। शायद परमेश्वर ने उन्हें अपनी शक्ति से वहीं रोक दिया था, जहां वे थे। पुन:, यह विवरण लूका की कहानी से सम्बन्धित नहीं है, और उसने हमें नहीं बताया। [38]कम से कम, उसे लगा कि वे किसी प्रकार की दैवीय शक्ति के भेजे हुए थे। [39]कई लोग शिशुओं के बपतिस्मे को इस तथ्य से प्रमाणित करने का प्रयास करते हैं कि दरोगा के घर के ''सब लोगों'' ने बपतिस्मा लिया था। लेकिन, ध्यान दें, कि घर के सब लोगों को जिन्हें बपतिस्मा दिया गया था (आयत 33), पहले सिखाया गया था (अयत 32) और उन्होंने विश्वास किया था (आयत 34)। इस विषय पर और विचार के लिए ''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पाठ ''परमेश्वर की पुकार का उत्तर'' में नोट्स देखिए। [40]यह लगभग प्रात: दो या तीन बजे का समय होगा जब दरोगा ने अपने परिवार सहित बपतिस्मा लिया।

[41]हो सकता है कि बन्दीगृह के अन्दर ही कोई तालाब हो, लेकिन दरोगा के लिए उन्हें बन्दीगृह से बाहर ले जाने में कोई कठिनाई नहीं थी। उसे ''उन्हें चौकसी से'' रखने का काम सौंपा गया था, कोठरी में डालने का नहीं। [42]पौलुस और सीलास ने गिरफ्तारी के बाद से अब तक कुछ नहीं खाया होगा। एक बार फिर, प्रेरितों के काम में मसीही अतिथि सत्कार पर ज़ोर दिया गया है। [43]क्रिसपुस और दरोगा के मसीही बनने में तुलना करें: क्रिसपुस के विश्वास करने की बात (18:8) में बपतिस्मे को स्वीकार करने के लिए उसका वचन को ग्रहण करना भी था (1 कुरिन्थियों 1:14)। [44]बहस कुछ इस प्रकार से होती है: ''प्रेरितों 16:31 बपतिस्मे का उल्लेख नहीं करता; इसलिए, उद्धार के लिए बपतिस्मा अनिवार्य नहीं है।'' यदि यह तर्क सही हो, तो मन फिराव और अंगीकार भी उद्धार के लिए आवश्यक नहीं होंगे, क्योंकि प्रेरितों 16:31 में विशेष तौर पर उनका उल्लेख नहीं किया गया। यदि कोई उत्तर देता है, ''किन्तु 'विश्वास' शब्द में मन फिराव व अंगीकार सम्मिलित है,'' तो फिर ''विश्वास'' शब्द में बपतिस्मा भी क्यों सम्मिलित नहीं हो सकता? [45]कम से कम एक प्राचीन हस्तलेख से संकेत मिलता है कि हाकिम भूकंप से घबरा गए थे और उन्होंने निर्णय लिया कि उन्होंने पौलुस और सीलास के साथ दुर्व्यवहार करके गलती की थी। पर शास्त्र इसके विपरीत गवाही देता है, इसलिए हम नहीं जानते कि ऐसा हुआ था या नहीं। [46]स्पष्टतया, सीलास के पास भी वही रोमी नागरिकता थी, जो पौलुस के पास थी। [47] हिसाब सही करने के लिए पौलुस, पिछली बार के मिलने का पछतावा किए बिना नगर में लौट आया। [48]बाइबल से बाहर के दस्तावेजों से संकेत मिलता है कि *सियूइस रोमानस सम* ही पुकारना पड़ता था, जिसका अर्थ है ''मैं एक रोमी नागरिक हूं।'' पौलुस का नाम तरसुस में एक रोमी नागरिक के रूप में पंजीकृत होगा; परन्तु सम्भवत: उसने अपने साथ उसका प्रमाण नहीं रखा, और पंजीकरण की सत्यापित प्रति भेजने के लिए समय लग गया होगा। [49]कॉफ़मैन ने इसे ''शास्त्र के महान वाक्यों में से एक'' कहा। सुसमाचार प्रचारकों को प्रोत्साहन की आवश्यकता थी, लेकिन इसके बजाय उन्होंने दूसरों को प्रोत्साहन दिया। [50]यदि इस पाठ का प्रवचन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है, तो निमन्त्रण में ज़ोर दिया जा सकता है कि परमेश्वर सुनने वालों के जीवन भी बदल सकता है यदि वे उस दरोगा की तरह विश्वास के साथ उसे ग्रहण करें।